1) करारबिन्देन .... स्मरामि

करारविन्देन = कर: + अरविन्दं

कर = हाथ , अरविन्दं = कमल

पदारविन्दं = पद + अरविन्दं

पद = पैर , अरविन्दं = कमल

मुखारविन्दे = मुख + अरविन्दं

मुख = मुँह , अरविन्द = कमल

वट + स्य , बरगद के

पत्रस्य = पत्ते के

पुटे = दोने में

शयानं = सोते हुए

बालमुकुन्द = कृष्ण जी की बाल रूप

मनसा = मन से (हृदय से)

अर्थ → वट पत्र के मध्य सोये हुए अपने हस्तकम[illegible] द्वारा पदकमल को मुखकमल प्रवेश कराते हुए, बालक कृष्ण को मन से स्मरण करता हूँ ।

Scanned by TapScanner

2 जीवने - - - - परिपूर्यताम् ॥

जीवने = जीवन में

यावद् = जितना या / जब तक

आदानं = ग्रहण

स्यात् = हो

प्रदान = देना , ततो + अधिकम् ।

ततो = उससे , अधिकम् = अधिक , ज्यादा

इत्येषा = इति + एषा , एषा , यह (स्त्रीलिंग)

प्रार्थना = विनति

अस्माकं = हमारी

भगवन् = ईश्वर

परिपूर्यताम् = पूरी करें ।

अर्थ → हे ईश्वर ! मैं चाहता हूँ कि आजीवन मुझे जो कुछ भी (धन-सम्पत्ति) प्राप्त हो उससे भी अधिक मैं दूसरों को और देता रहूँ । अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरी यह इच्छा आप पूर्ण कर दें ।

* एकेन वाक्येन उत्तरत । (only Ans.)

(क) वटपत्रस्य पुटे बालमुकुन्दशयनं करोति ।

(ख) मनसा बालमुकुन्दं स्मरणं क्रियते ।

(ग) कविः कामयते भगवन् ! अस्माकं प्रार्थना परिपूर्यताम्

Scanned by TapScanner